शेखर जोशी की कहानियों में मानवीय संवेदना

आरती सिंह

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, पण्डित ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश.

प्रमुख शोध समस्या

शेखर जोशी की कहानियों में मानवीय संवेदना के स्वरूप की पहचान।

शोध की आवश्यकता - समकालीन भारतीय समाज में व्याप्त समस्याओं की समझ विकसित करने के लिए हिन्दी के महत्वपूर्ण कथाकार शेखर जोशी की कहानियों में चित्रित जीवन को देखना और समझना आवश्यक है।

शोध पत्र का उद्देश्य - शेखर जोशी की कहानियों के अन्तर्गत मानवीय संवेदना के विविध पहलुओं को यथार्थ और मार्मिकता के साथ दर्शाना।

शोध प्रविधि - इस शोध-पत्र में शेखर जोशी की कहानियों में चित्रित समकालीन भारतीय समाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा इनमें व्यक्त मानवीय भावनाओं की पहचान के लिए विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

पूर्व धारणा- महत्वपूर्ण कथाकार शेखर जोशी की कहानियों के अन्तर्गत स्वाधीन भारत के बदलते परिवेश, युवा मध्यम वर्ग, मानवीय संवेदना एवं उनसे जुड़े तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक उथल-पुथल का जीवन उदाहरण दर्शाया गया हैं। कथाकार ने सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को अपनी धारणा के अनुरूप समझाने का उत्तम प्रयास किया है।

बीज शब्द - मानवीय संवेदना, संवेदनशील, साहित्यकार, अभिव्यक्ति, कहानियों, चित्रित

सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन - आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास डा0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण: 2020 प्रयागराज द्वारा मुद्रित, नई कहानी के सन्दर्भ में शेखर जोशी, तुलनात्मक अध्ययन, प्रज्ञा परम, हिन्दी शोध छात्रा, दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट ऑफ आगरा

शोध समस्या का परिचय - शेखर जोशी जी की कहानियाँ यथार्थता से परिपूर्ण होने के साथ ही मानवतावादी विचारधारा को अभिव्यक्ति देने में भी अग्रसर हैं। शेखर जोशी जी ने अपनी संवेदना व सहानुभूति के द्वारा कहानी के अन्तर्गत घटित घटना विषय और व्यक्ति के अन्तर्निहित भावों को साहित्य में दर्शाया हैं। इनकी प्रस्तुति का ढंग अत्यंत सहज हैं। अन्य सुप्रसिद्ध साहित्यकार मधुरेश तथा राजेन्द्र यादव जी ने भी अपने साहित्य में शेखर जोशी की महत्वपूर्ण कहानियों में से 'कोसी का घटवार' 'बदबू' 'नौरंगी बीमार हैं', 'हलवाहा' जैसी प्रसिद्धकहानियों के माध्यम से मानवीय संवेदना के महत्वपूर्ण पहलुओं, कहानियों के अन्तर्गत परिवेश, पात्र, स्वभाव, बोलचाल को बहुत ही मार्मिक ढंग से दर्शाया हैं। मध्यमवर्गीय परिवार के संघर्षों, पहाड़ के जीवन में व्याप्त संघर्ष और तत्कालीन समाज में निरन्तर हो रहे परिवर्तनों को साहित्यकार ने स्वयं अनुभव किया हैं और पाठकों को भी उसी प्रकार से अनुभव हुआ, जैसे साहित्यकार ने अपनी कहानियों के अन्तर्गत अभिव्यक्त किया हैं। इनकी कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

विवेचनात्मक अध्ययन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान उसके मानवीय गुणों के माध्यम से होती हैं। प्रत्येक मनुष्य के मानवीय गुण सहानुभूति, संवेदना, दुःख, सुख, उल्लास, अवसाद होते हैं। मनुष्य अन्य व्यक्ति के दुःख को देखकर दुःखी होता है, सुख को देखकर प्रसन्न होता हैं और किसी संवेदनशील घटना को जब किसी व्यक्ति के साथ घटित होता हुआ देखता है तो उसके प्रति सहानुभूति का भाव भी व्यक्ति के अन्तर्मन में उत्पन्न होता है। हमारे समाज में आए दिन इस प्रकार की घटनाएँ घटित हुई हैं, जिसमें मानवता भी शर्मसार हुई।

साहित्य व संवेदना एक दूसरे के पूरक हैं। साहित्य के माध्यम से साहित्यकार अपनी मानवीय संवेदना को पाठक के सम्मुख ही नहीं बल्कि पूरे समाज की संवेदना को अभिव्यक्त करता है। हिन्दी साहित्य में ऐसे चर्चित साहित्यकार हुए जिनकी कृतियाँ मानवीय संवेदनाओं को स्पर्श करती हैं ऐसे ही सुप्रसिद्ध साहित्यकार शेखर जोशी जी हैं। "शेखर जोशी ने रचनात्मक यर्थाथशीलता और कहानी के अन्तर्गत पात्रों की मानवीय संवेदना को लेखनी के माध्यम से पाठकों और समीक्षकों के मध्य स्वतंत्र पहचान बनाते हुए सशक्त अभिव्यक्ति दर्ज करायी है।"1

कहानी के माध्यम से शेखर जोशी जी ने अपने अंतर्निहित भावों को पाठक के सम्मुख बहुत उत्तम ढंग से प्रस्तुत किया है। शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों में अपने भावों को जैसा वे स्वयं महसूस करते थे, उसे उसी संवेदना के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। यह समर्थ साहित्यकार की पहचान है कि वो जिस प्रकार से स्वयं अपने भावों को महसूस कर रहा है, वैसा ही पाठक को भी अनुभूत कराए। शेखर जोशी जी ने समाज से जुडे संवेदनशील मुद्दे, प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन और मानवीय संवेदनाओं को मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। शेखर जोशी जी की कहानियों को पढते हुए गहन मानवीय संवेदना की अनुभूति होती है, जो पाठकों के मन में अमिट छाप छोड जाती है।

'शेखर जोशी जी की कहानियों में मानवीय संवेदना' के अन्तर्गत मनुष्य के सभी मानवीय गुण सहानुभूति, संवेदना, सुख-दुःख, ओर समाज की उसके प्रति जो भी प्रतिक्रिया रही है उसे अपनी कहानी के पात्रों के माध्यम से बहुत ही मार्मिक ढंग से पाठकों के सम्मुख रखा है। शेखर जोशी ने बड़ी खामोशी से अपने सहज स्वभाव के साथ इस धारा में शामिल रहे।

उनकी कहानियाँ हलवाहा, दाज्यू, समर्पण, कोसी का घटवार जैसी बहुचर्चित कहानियों के माध्यम से पाठकों को मानवीय संवेदना के सभी गुणों को अनुभूत कराया। उन्होंने अपनी कहानियों को एक बेहद संवेदनशील कथाकार के तौर पर जो ट्रीटमेन्ट दिया है, वह उन्हें अन्य कथाकारों से अलग खड़ा करता है। इनकी अन्य सशक्त कहानियों- 'बदबू' 'निर्णायक' 'गोपुली बुआ' 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ, 'सिनारियो', 'नौरंगी बीमार है', 'मेंटल' आदि।

"शेखर जोशी की कहानी 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' का आधार एक ऐसी सामाजिक बुराई है जिसने युवा पीढ़ी को कुण्ठाग्रस्त कर दिया है। बेरोजगारी या बेकारी इस कहानी के सर्वाधिक पहलू हैं, इसकी विचारधारा तथा व्यवहार ठीक अपने समय पर केन्द्रित हैं। 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' कहानी को शेखर जोशी के समकालीन कहानीकारों की कुछ कहानियों के साथ रखा जा सकता है, जैसे- अमरकान्त की कहानियाँ- 'इन्टरव्यू' 'डिप्टी कलेक्टरी', मार्कण्डेय की कहानियाँ- 'साबुन', 'आँखें', निर्मल वर्मा की कहानियाँ- 'सितम्बर की एक शामा', पिक्चर पोस्टकार्ड' आदि।"

"उनकी कहानी 'दाज्यू' (1953) को देखें तो पात्र कुमाऊँ का है 'दाज्यू' शब्द पहाड़ी परिवेश का है और इसी सम्बन्ध-बोधक शब्द के इर्द-गिर्द पूरी कहानी चलती है। दूर देश से आए जगदीश बाबू की मुलाकात एक कैफे में 'चाय-शाब' कहने वाले लड़के से होती है, दोनो एक ही क्षेत्र के हैं और सुदूर क्षेत्र के अजनबीपन और अकेलापन महसूस करने वाले जगदीश बाबू से कुछ संवाद होने के कारण मदन उनमें अपना दाज्यू खोज लेता है। कहानीकार अपनत्व के भाव को मदन के विचारों में चल रहे द्वंद्व से दिखाता है- "मदन को जगदीश बाबू के रूप में किसकी छाया निकट जान पड़ी। ईजा?- नहीं बाबा?- नहीं दीदी,.... भुलिं? नहीं दाज्यू? हाँ दाज्यू ख्पप, किन्तु जगदीश बाबू के व्यवहार बदलने से मदन की कोमल भावनाओं को चोट पहुँचती है। जगदीश बाबू की प्रेस्टीज उनके लिए सबसे बड़ी है, वह मदन से कहते हैं "चाय नहीं लेकिन ये दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो दिन रात। किसी की प्रेस्टीज का ख्याल भी नहीं है तुम्हें।" अपरिचित इस संसार में जब अपने इलाके का व्यक्ति देसरे व्यक्ति से मिलता है, तो उसे उस व्यक्ति के साथ

अपनापन महसूस होता है लेकिन जब दोनो व्यक्तियों में से कोई एक झूठे अहम (प्रेस्टीज) के कारण दूसरे व्यक्ति की भावना को ठेस पहुँचाता है तो उस व्यक्ति से मोह भंग की स्थिति हो जाती है। इसी व्यवहारिक बदलाव को बहुत सुन्दर ढंग से शेखर जोशी ने 'दाज्यू' कहानी में दर्शाने का प्रयास किया है, वे इस प्रयास में पूरी तरह सफल रहे हैं।

'बदबू' कहानी के अन्तर्गत शेखर जोशी जी ने मजदूरों के शोषण और निर्यात से सम्बन्धित समस्या का वर्णन किया है। कहानी का मुख्य पात्र एक नया मजदूर है, उसके हाथों में गन्दगी लगी है। वह अपने हाथों को कैरोसीन के तेल में डुबाता है, जिससे उसकी कालिख तो साफ हो जाती है लेकिन कैरोसीन की बदबू नहीं जाती। अब वह साबुन से हाथ मलना शुरू कर देता है। वहाँ पर एक दूसरा युवक यह सब देख रहा था जिसका नाम घासी था। घासी ने एक किस्सा सुनाया। घासी ने रहय से कहा पहले हम भी ऐसे ही अपने हाथों को सूँघते थे पर अब कभी ऐसा भी होता है कि हाथों को ऐसे ही पोछ-पाँछ कर खाना खा लेते हैं। यह सुनकर उसे आश्चर्य हुआ कि कैसे कोई इतनी दुर्गन्ध को छुड़ाए बिना चैन से रह सकेगा। उसे विश्वास न हुआ, जब सारे मजदूर घर जाने लगे तो उनकी तलाशी शुरू हुई और आखिर में एक लकड़ी को कूदकर पार करना होता था ताकि किसी ने कुछ चुराया हो तो वह गिर जाए। मैंने मजदूरों से कहा, 'ये क्या आफत है, एक बुजुर्ग ने कहा! अभी नए हो, धीरे-धीरे आदत हो जाएगी।' बुजुर्ग ने फिर कहा, शुक्र करो उस ईश्वर का कि हमें कोई काम तो मिला है। उसके दिमाग में बुजुर्ग की ये सारी बातें गूँजती रहीं। उसका पहला दिन था लेकिन धीरे-धीरे वह घुटन और अवसाद की छाया में दिनों-दिन बोझिल होता जा रहा था। जीवन ऐसे ही चला जा रहा था, किसी प्रकार की नवीनता नहीं थी। अब एक दिन एक घटना हुई, जिससे उसके साथियों का व्यवहार उसके प्रति शंकालु हो गया। यह घटना थी बीड़ी की घटना। बात यह थी कि साहब ने बुधन को बीड़ी पीते देख लिया, लेकिन जैसे ही बुधन का मुँह खुलवाया तो सुलगती बीड़ी बुधन निगल चुका था। जब मजदूर एकत्र हुए तो साहब ने बताया कि यहाँ कारखाने में कीमती चीजें हैं। आग लग जाएगी तो लाखों का नुकसान हो जाएगा। 'बुधन' को चेतावनी दी और एक रुपये का दण्ड भी लगाया, तभी भीड़ में ऊँचे स्वर में उसने कहा आग तो सभी लोगों की बीड़ी सिगरेट से लग सकती है। अफसर साहब तो मुँह में सिगरेट दबाए काम करते रहते हैं।' चीफ साहब ने चीखते हुए गुस्से से कहा, हम देख लेंगे। सभी मजदूरों ने रहय को खुलकर सहानुभूति नहीं दी बल्कि कुछ मजदूर ने दबे स्वर में उसकी सराहना की। कुछ मजदूर उसको कहते, नेता जी! जय राम। वही हुआ, जिस बात का उसे डर था। सारी रिपोर्ट चीफ के पास पहुँच गयी कि कुछ मजदूर एक साथ बैठ कर मीटिंग करते हैं और अपने अधिकारों की बात करते हैं। उसने कहा, यहाँ छोटी-छोटी बात पर जुर्माना हो जाता है। छुट्टियों का कोई ठीक हिसाब ही नहीं है। साहब ने कहा, मैं भी तो तुम्हारी तरह छोटा सा नौकर ही तो हूँ। उसने कहा कि ठीक है, अब जो हमारी बात सुनेगा, हम उसी से कहेंगे। साहब ने गुस्से से कहा कि तुम ज्यादा न बोलो, नहीं तो तुम्हें सीधा कर दूँगा।' 'बदबू' कहानी के माध्यम से मजदूरों के ऊपर हुए शोषण को शेखर जोशी जी ने बड़े मार्मिक ढंग से दर्शाया है। इस कहानी में मानवीय संवेदना की गहरी छाप है।

'कोसी का घटवार' शेखर जोशी जी की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। इस कहानी में मानवीय संवेदना देखते ही बनती है। इस कहानी के महत्वपूर्ण पात्र 'गोसाईं' और 'लक्षमा' हैं। इन दोनो पात्रों के प्रेम की गहराई और एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना की उन्होंने बहुत सुन्दर प्रस्तुति दी है। 'कोसी का घटवार' कहानी के अन्तर्गत 'गोसाईं पलटन से रिटायर होता है, वह युवक से अधेड़ हो जाता है और लक्षमा को जब देखता है तो "गोसाईं के मन में एक झिझक है। जो उसे लक्षमा के सामने कूछ कहने से रोक रही है। वह लक्षमा से अपने मन में चल रहे अन्तर्द्वद्व को बातों के माध्यम से व्यक्त नहीं कर पा रहा है। 'गोसाईं' दूर' 'घट' पर जब आटा पीस रहा था तो लक्षमा गेहूँ की पोटली सिर पे रख साथ में अपने बेटे को लिए चली आ रही थी। उसके बेटे को भूख लगी थी। वह बार-बार अपनी माँ से खाने की बात कर रहा था। लक्षमा अपने बेटे को मना कर रही थी। लक्षमा अपने बेटे से घर चल के खाना देने की बात कर रही थी। जैसे-जैसे लक्षमा गोसाईं की आटा-चक्की पीसने वाले स्थान पर पहुँचती है तो बेटा खाने की फिर से जिद करने लगता है। पहले तो दूर होने के कारण गोसाईं लक्षमा को पहचान नहीं पाता पर जब लक्षमा थोड़ा नज़दीक पहुँचती है तो गोसाईं उसे पहचान जाता है। वह लक्षमा का हाल-चाल पूछता है और उसके बेटे के लिए रोटी भी बनाता है। लक्षमा को रोटी उसके बेटे को देने के लिए कहता है। लक्षमा वह रोटी बेटे को दे देती है। लक्षमा गोसाईं से कहती है कि शादी के कुछ समय व्यतीत हो जाने के बाद उसके पति का देहान्त हो गया और ये अभागा मेरे पास अकेला रह गया। अब वो अपने मायके आ गयी है। गोसाईं लक्षमा से कहना तो बहुत कुछ चाहता है पर वो चाहकर भी कुछ नहीं कह पाता। गोसाईं के अधूरे प्रेम और मानवीय संवेदना को शेखर जोशी जी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से अपनी कहानी में अभिव्यक्त किया है। "शेखर जोशी की 'कोसी का घटवार' रोमानी स्पर्श से रिक्त न होते हुए भी अधिक यथार्थ है।"

'शेखर जोशी द्वारा रचित कहानी- 'नौरंगी बीमार है' जो उस दौर के माहौल और आम लोगों की मानसिक अवस्था को दर्शाती है। इस कहानी में समाज में फैले भ्रष्टाचार को साहित्यकार ने बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। समाज में भ्रष्टाचार ऊपर से आता है, सभी लोग

ऐसा ही मानते हैं परन्तु भ्रष्टाचार निचले स्तर पर भी समाज में व्याप्त हैं। 'नौरंगी बीमार है' कहानी का नायक 'नौरंगी' बहुत ईमानदारी से अपना घर चला रहा है लेकिन एक दिन उसके खाते में बहुत से पैसे आ जाते हैं। अब नौरंगी इन पैसों को वापस करे या फिर हमेशा इसी पछतावे में जिए कि वह भी दूसरों की तरह लालची है। इसी अन्तद्वन्द को इस कहानी के माध्यम से शेखर जोशी ने पाठकों के सम्मुख दर्शाने का उत्तम प्रयास किया है।
निष्कर्ष - शेखर जोशी जी ने पहाड़ के जीवन में व्याप्त संघर्ष और परिवर्तन को महसूस किया है। ये यर्थाथपरक कहानीकार तो हैं ही, साथ ही आदर्शवादी निर्णय लेने में भी कुशल साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में मानवतावादी विचारधारा को अभिव्यक्ति देने में अहम भूमिका का निर्वाह किया है।

"इन कहानियों में आदर्श एवं यथार्थ का अद्भुत सामन्जस्य है। शेखर जोशी जी ने अपनी संवेदना एवं सहानुभूति से आत्मसात् कर जिस घटना, विषय और व्यक्ति को चित्रित किया है, वह पाठकों के सामने प्रत्यक्ष हो उठता है। इनकी कहानी संवेदना एवं शिल्प की दृष्टि से भी पाठकों के समक्ष खरी उतरती है।" हिन्दी कथाकारों में 'शेखर जोशी' का योगदान अभूतपूर्व है। ये अपनी कहानी के माध्यम से अपने पाठकों के समक्ष सदैव जीवित रहेंगे।

References

1. प्रियंका सौरभ लेख/विचार/पत्थर होती मानवीय संवेदना बृहस्पतिवार 21 दिसम्बर 2023
2. शोध आलेख हिन्दी महिला आत्मकथाओं में नारी सशक्तिकरण इक्कीसवीं सदी के सन्दर्भ में- शोध छात्रा, हिन्दी- तनुप्रिया मिश्रा, 2023
3. नई कहानी के सन्दर्भ में शेखर जोशीः तुलनात्मक अध्ययन, प्रज्ञा परम, शोध छात्रा, हिन्दी, दयालबाग इंस्टीट्यूट आॅफ आगरा
4. शोध आलेखः शेखर जोशी का कथा संसार/डा0 चंदा सागर, शनिवार, दिसम्बर 31 2022, मुख्य पृष्ठ 45
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डा0 बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज द्वारा मुद्रित, पृष्ठ सं0 363
6. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक शोध पत्रिका (Peer Reviewed Refereed) शोध पत्रिका, 2011